RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 3 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 23 जून 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

जोहार क्लब का स्वर्णिम इतिहास जारी है

फुटबाल का आकर्षण और निकल रहे हैं मेधावी खिलाड़ी

इस बार क्बल ने मनाया अपना 70 वां खेलोत्सव

मैराथन में उमड़े खिलाड़ी, विजेताओं को किया पुरस्कृत

कार्यालय प्रतिनिधि

मुनस्यारी। सीमान्त का जोहार क्लब मुनस्यारी इस बार अपने 70 वे वार्षिक खेलोत्सव के साथ स्वर्णिम यादों का सफर जारी रखे हुए है। क्लब का इतिहास बताता है कि क्षेत्रवासियों की एकता व खेलों के प्रति लगाव के कारण ही लगातार इतना बड़ा आयोजन होता रहा है। ग्रीष्मकालीन खेलों के रूप में आरम्भ जोहार क्लब के खेलों का सबसे प्रिय खेल 'फुटबाल' रहा हैट। इसके अलावा मैराथन सहित अन्य खेलों ने इसमें जगह बनाई है लेकिन फुटबाल को लेकर जो जुनून खिलाड़ियों व दर्शकों में है, यही कारण है हिमनगरी से कई मेधावी देश के अन्य हिस्सों में जाकर अपनी खेल प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं। खेलों के प्रति दीवानगी ही है कि जोहार क्लब के मैदान में खेलों का स्तर भी बहुत बढ़ चुका है। फुटबाल सीनीयर, अण्डर-14 और बालिका वर्ग के रोचक मुकाबलों के अलावा बॉलीबाल, कैरम, शतरंज, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, बाक्सिंग, मैराथन का आयोजन इस बार भी देखने को मिला। आयोजन का उद्घाटन नगर पालिका चैयरमैन राजेन्द्र सिंह पांगती ने किया। उद्घाटन अवसर के बाद से केदार सिंह मर्तोलिया व क्लब की पूरी टीम जिस लगन से जुटी रही प्रतिदिन रोचक मुकाबले देखने के लिये दर्शकों की भारी भीड़ भी जुटी। अतिथियों में उत्तराखण्ड बाक्सिंग एसोसिएशन के सचिव गोपाल खोलिया, महाप्रबन्धक भारतीय रिजर्व बैंक मुम्बई प्रयाग सिंह रावत, पूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. नारायण सिंह पांगती, प्रधान आयकर आयुक्त नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, पूर्व प्रबन्धक उत्तराखण्ड ग्रामीण बैंक त्रिभुवन सिंह जंगपांगी, अभियन्ता बार्डर रोड आर्गनाईजेशन चण्डीगढ़ दिनेश सिंह पांगती, अध्यक्ष

शेष पृष्ठ 5 पर

भारत के मीलपत्थर

द्रोपदी : अन्याय के सतत प्रतिरोध का प्रतीक

सूर्यकान्त बाली

द्रौपदी का जैसा अदम्य और कभी हार न मानने वाला चरित्र हमारे सामने उभरता है, उसे वैसा किसने बनाया? पूरा महाभारत प्रबन्धकाव्य पढ़ जाइए, द्रौपदी के बाल्यकाल का कोई विवरण हमें वहाँ नहीं मिलता। महाभारत कथा में द्रोपदी के साथ हमारा परिचय उस स्वयंवर के समय होता है, जिसमें ब्राह्मणवेषधारी अर्जुन ने छत पर लटकती घूमती यन्त्र सरीखी मछली की आँख फोड़ने का अद्भुत कर्म किया था। उसी स्वयंवर के मौके पर ही हमें द्रौपदी के जन्म की कथा पता चलती है जो अविश्वसनीय भी है। पर पहले उसे क्यों न जान लिया जाए?

जन्मकथा संक्षेप में यह है कि अपने मित्र द्रोण से अपमानित कर दिए गए पांचालराज द्रुपद ने ठान ली थी कि उसे एक ऐसी सन्तान चाहिए जो अपने समय में महानतम धनुर्धारियों में से एक यानी द्रोण से उस अपमान का बदला ले सके। अपने संकल्प की पूर्ति में भटकते द्रुपद को याज और उपयाज नामक दो यज्ञ विशेषज्ञ ब्राह्मण तपस्वी मिले। उन्होंने उसे एक ऐसा पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया, जिसमें पूर्णाहुति की चरु डालने के साथ ही दो सन्तानों का जन्म उसी यज्ञानि में से हो गया, जिन्हें इतिहास धृष्टद्युम्न और द्रौपदी के नाम से जानता है। द्रौपदी के भाई यह धृष्टद्युम्न वही है जो 18 दिनों तक चले महाभारत युद्ध में पाण्डवों की सेना का सेनापति था, जहाँ कौरवों के सेनापति भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य और दुर्योधन एक के बाद एक बनते और युद्धभूमि में मरते रहे, वहाँ धृष्टद्युम्न लगातार 18 दिनों तक पाण्डव सेना को अक्षत होकर नेतृत्व देता रहा था, जिसने युद्ध के पन्द्रहवें दिन पुत्र अश्वत्थामा के निधन का झूठा समाचार पाकर निश्शस्त्र हो चुके द्रोणाचार्य को अपनी तलवर से मौत के घाट उतार दिया था, पर जो स्वयं युद्ध समाप्त हो जाने के बाद रात के अन्धेरे में निद्रावस्था में ही अश्वत्थामा द्वारा क्रूरतापूर्वक मौत के घाट उतार दिया था, पर जो स्वयं युद्ध समाप्त हो जाने के बाद रात के अन्धेरे में निद्रावस्था में ही अश्वत्थामा द्वारा क्रूरतापूर्वक मार दिया गया था। उस धृष्टद्युम्न की बहन द्रौपदी का जन्म भी उसी अग्नि में से माना गया है।

हम इस जन्मकथा को अवश्वसनीय इसलिए कह रहे है। क्योंकि दो पूर्ण युवा भाई-बहिनों का इस तरह यज्ञाग्नि में से उत्पन्न हो जाना तर्क को अपील नहीं करता तो क्यों की गई यह कल्पना? क्यों द्रौपदी के जन्म को इस तरह अग्नि और यज्ञ के साथ जोड़ दिया गया? जाहिर है कि कोई बड़ी बात हुई होगी। जिसे हमारे प्रबन्धकार ने एक अद्भुत कथा का आकार दे दिया है।

द्रुपद का एक नाम यज्ञसेन है, जिसके कारण द्रौपदी को याज्ञसेनी कहा जाता है। वैसे ही जैसे पांचाल देश की राजकन्या होने के कारण उसे पांचाली भी कहा जाता है। अनुमान लगा सकते हैं कि (धृष्टद्युम्न और) द्रौपदी के बाल्यकाल में जो घटा उसे इस याज्ञसेनी नाम का आश्रय लेकर महाभारतकार ने एक ऐसा मिथकीय आकार दे दिया है, जिसका परिणाम तो यज्ञाग्नि-जन्म के रूप में हमें अपरिचित ही रख दिया गया है। हो सकता है कि पूरा घटनाक्रम इतने गुपचुप और रहस्यमय तरीके से घटा हो कि स्वयं महाभारतकार को भी इसका कोई खास, प्रामाणिक रूप से पता न हो। पर जैसा संकल्पवान और अजेय चरित्र हमें इन दोनों भाई बहनों का महाभारत में मिलता है, उसे देखते हुए स्पष्ट है कि इन दोनों को कोई बड़ा भारी मानसिक और शारीरिक प्रशिक्षण बाल्य और किशोर अवस्था में दिया गया होगा। जार धृष्टद्युम्न को तो देखिए। भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य और दुर्योधन जिस युद्ध में एक-एक कर सेनापति बनते रहे हों और रणभूमि में काम आते रहे हों, वहाँ धृष्टद्युम्न ने अकेले दम पर अठारह दिनों तक पाण्डव सेना को नेतृत्व दिया। और नेतृत्व भी कैसा? सात अक्षौहिणी सेना का नायक बन कर उसने अपने से ड्यौढ़ी यानी ग्यारह अक्षौहिणी कौरव सेना का पूरी सफलता से अठारह दिनों तक लोहा लिया और उसे मारने के लिए अश्वत्थामा को रात के अन्धेरे का और धृष्टद्युम्न पर छाई हुई नींद का सहारा लेना पड़ा परन्तु जिस त्वरा और निर्ममता से, 'न मारो न मारो' के भयानक आर्तनाद के बीच, पूरी निष्ठुरता से धृष्टद्युम्न ने द्रोण का सिर अपनी तलवार से काटा, एक धारणा यह है कि द्रोण ने तो समाधि में बैठते ही अपने प्राण छोड़ दिए थे, पर उस निष्प्राण शरीर के भी सिर को जैसे धृष्टद्युम्न ने अपनी तलवार से काटा, वह उस कठोरकर्मा सेनापति के हृदय में जलती द्रोण विरोधी आग का प्रतीक है। क्या किसी भयानक शारीरिक और मानसिक प्रशिक्षण के बिना यह सम्भव है?

नहीं सम्भव है, ठीक इसी तर्क के आधार पर अब हम द्रौपदी के चरित्र का अध्ययन करते हैं तो उसमें हमें एक तत्व का जबर्दस्त समावेश नजर आता है और इस तत्व का नाम है प्रतिशोध। द्रौपदी एक ऐसा अद्वितीय नारी चरित्र है,

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

अतिक्रमण के कारण डूबते शहर

उत्तराखण्ड में इन दिनों सभी जिलों में नदी, नाले, नाली के ऊपर हुए अतिक्रमण हटाने का अभियान चल रहा है। बरसात में होने वाले नुकसान को देखते हुए पहली बार बड़े स्तर पर अभियान की शुरूआत की गई है और शहरों में घिर चुके नालों पर अवैध कब्जे हटाए गये हैं। अतिक्रमण शत प्रतिशत हटा है या हट जाएगा, यह तो दावा किया ही नहीं जा सकता है। क्योंकि मौका मिलते ही छोटे-बड़े हर तरह के अतिक्रमण पानी निकासी वाली जगह से लेकर बहते पानी के रास्ते पर किया गया है।

अतिक्रमण के कारण डूबते शहरों का हाल अब और भी बुरा होता जा रहा है। पिछली बरसात में जिस प्रकार से कई शहर जलमग्न हो गये थे वह सबके लिये आश्चर्य था। उस घटना को याद करते हुए ही शासन ने इस बार पहले से तैयारी के निर्देश दिये थे और प्रशासन भी अपनी चाल तेज करने लगा। बनबसा, खटीमा, टनकपुर के वह मोहल्ले पिछली बरसात में डूब गये जहाँ सोचा भी नहीं था। इसके अलावा रुद्रपुर, बाजपुर, काशीपुर, जसपुर हल्द्वानी सहित अन्य शहरों में जलभराव से नुकसान हुआ था। बरसात के पानी के निकासी का रास्ता न होने से होने वाले नुकसान को देखते हुए अतिक्रमण हटाओ अभियान को सराहनीय कहा जाएगा। साथ ही इस सवाल को सबने समझना चाहिये कि ऐसा अतिक्रमण किया ही क्यों जाए जो अपने लिए खतरा बनने वाला है। पहाड़ से लेकर मैदान तक बहुत से कब्जे देखे जा सकते हैं जो किसी लोभ-लालच में कर दिये गये थे। कलमटों को घेरकर, नाले को ढककर, नदी को घेरकर किये गये निर्माण का ठहराव कभी भी सम पर नहीं हो सकता। एक न एक दिन उसे प्रकृति ढहा देती है और उसके साथ बहुत नुकसान अलग से होता है।

पिछले अनुभवों और देखे गये हालातों से सबक लेते हुए सभी को पानी निकासी के द्वार से लेकर उसके बहाव वाले स्थान पर निर्माण से बचना होगा। अतिक्रमण से डूबते शहर को शहर नहीं कहा जा सकता। सुरक्षित और साफ-सुथरे शहरों को ही शहर श्रेणी में गिना जाता है, इसे साकार करें।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

सऊदी अरब ने नहीं लगया प्रतिबन्ध

नई दिल्ली। सऊदी अरब द्वारा भारतीय यात्रियों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया है। बताया गया है कि सऊदी अरब की यात्रा करने वाले भारतीयों पर प्रतिबन्ध की रिपोर्ट गल है, सऊदी सरकार ने ऐसी कोई अधिसूचना जारी नहीं की है। हज के माह भीड़ से बचने के लिये अल्पकालीन बीजा पर अस्थायी प्रतिबन्ध लगाया जाता है।

सिंगापुर में चोरी करते पकड़ी महिलाएं

सिंगापुर। चार्ग हवाई अड्डे पर अलग-अलग दुकानों में चोरी की घटनओं को अंजाम देने के आरोप में दो भारतीय महिलाओं को हिरासत में लिया गया। पुलिस ने बताया कि 29 व 30 साल उम्र की महिलाओं ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया, जिसके लिये उन्हें हिरासत में लिया गया।

पाकिस्तान अपना रक्षा खर्च बढ़ाएगा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने अगले वित्त वर्ष के लिये अपना वार्षिक संघीय बजट पेश किया, जिसमें रक्ष व्यय पर पर्याप्त बढ़ोत्तरी की है। वित्त मंत्री मो.औरंगजेब ने बजय नेशनल असेम्बली में पेश किया।

नाटो सदस्य अमेरिका से खरीदेंगे विमान

वाशिंगटन। उत्तरी अटलांटिक सन्धि संगठन (नाटो) के महासचिव मार्क रूटे ने कहा कि संगठन के सदस्य देश गठबन्धन को सैन्य शक्ति को मजबूत करने के लिये अमेरिका से कुल 700 एफ-35 लड़ाकू विमान खरीदेंगे। नाटो देश सैन्य उत्पादन में रूस और चीन से पीछे हैं और सैन्यीकरण पर खर्च बढ़ाने की यह योजना है।

अफगानों से पाकिस्तान छोड़ने को कहा

पेशावर। पाकिस्तान ने अफगान नागरिकों और सभी अवैध विदेशियों को स्वेच्छा से देश छोड़ने को कहा और स्वदेश वापसी की प्रक्रिया बाधा डालने वालों के खिलाफ कड़ी चेतावनी जारी की है। गृह मंत्रालय ने कहा कि अपने देश लौटने वालों से सम्मानजनक व्यवहार किया जा रहा है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के पैतृक घर में तोड़फोड़

ढाका। नोबेल पुरस्कार विजेजा रवीन्द्रनाथ टैगोर के बांग्लादेश के सिराजगंज जिला स्थित पैतृक घर पर भीड़ ने हमला कर तोड़फोड़ की। इस घटना की जांच के लिये अधिकारियों ने तीन सदस्यीय समिति गठित की है। बताया गया है कि कचहरीबाड़ी को रवीन्द्र कचहरीबाड़ी के रूप में जाना जाता है। यहां पार्किंग शुल्क को लेकर विवाद हुआ था।

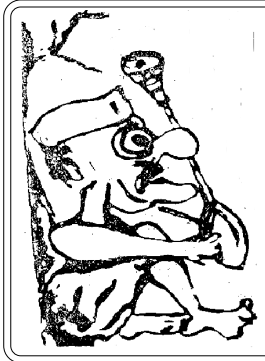

फसक

दाज्यू, अपने फांचे-पुन्तरों की टांजपांज हो रही ठैरी

खुलेआम नंग्योई के बाद सबको धमका रहे हैं बल

दाज्यू, शासन ने पंचायतों को प्रशासकों के हवाले करते हुए अधिकारियों को जैसे ही नामित किया, साफ हो चुका है फिलहाल प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव टल गए हैं। दाज्यू, भिक्कू और भूरी के अरमान धरे रह गये। दोनों चुनाव लड़ने के लिये लम्बे समय से फड़फड़ाट कर रहे हैं। कह रहे थे- 'भ्रष्टाचार की जड़ बहुत गहरी हो चुकी है और चारों ओर फैल रही हैं।' दाज्यू, भिक्कू ने गुस्से में आकर गाँव से पलायन कर लिया है और पटरी पार वाले शहर में दवाखाना खोलने की सोच रहा है। हमने बहुत समझाया कि हाकिम जाबेद बदांयू वाले का देशी दवाखाना पहले से खुला है और प्रोफेसर बुलरुवा सहित खासे लोगों का मुफ्त इलाज वहीं होता है। बुलरुवा उम्र के पड़ाव में भूरे लाल मियाँ की मीठी गोली खाकर मस्त है। उनका मानना है- 'चाहे कोई कुछ कहे, गाली दे, थप्पड़ मारे, गधे में बैठा दे, वह सेंट-क्रीम लगाकर अपने को चमकाते रहेंगे।' दाज्यू, कलजुग में मैकप का प्रभाव बहुत ठैरा।

दाज्यू, रुद्रपुर में मायाजाल में फंसाकर दुष्कर्म करने वाला बाबा गिरफ्तार हो गया। अपने को देवी शक्ति का अवतार बताने वाला बाबा जालसाजी के अलावा दुष्कर्म करने में तेज है बल। वह शातिर दिमाग और वेश बदलने में भी माहिर बताया जा रहा है। इससे हमें शातिरों की टोली याद आ गई जब दिन भर लट्ठ लेकर चांद-तारे तोड़ने का सपना दिखाने वाले एक-दूसरे की सूंघने से मस्त थे। अपने आप से बोलना फिर अपने आप चिल्लाना, फिर चक्कर लगाना, उसके बाद किसी को झिड़क देना और अन्त में अपने कर्मों पर रोना। दाज्यू, आप जानने ही वाले ठैरे कि आखिर वेश बदलकर कितनी दिन ठगी का धन्धा चलेगा। सबको पता है जब सेन्टरआउट होता है तो दर्द सिर पर चढ़ जाता है। सुगम-दुर्गम का रोना वर्षों से चल ही रहा है। इस बार तो अपने फांचे-पुन्तरों की टांजपांज हो रही ठैरी। मोनू मास्टर तो अपने स्थानान्तरण को लेकर बीस रुपये का प्रसाद भी चढ़ा चुका है। कुछ दिन पहले मोनू और सोनू ने घोड़े के बाल का ताबीज बनाकर गले में डाल लिया था। कह रहे हैं- 'बहुत पैसा है, कुछ करने की जरूरत नहीं रही। शेयर मार्केट का खेल लखपति बना देगा।' दाज्यू, यही सब तो आजकल की सच्चाई है। पटरी पार कालेज में और हो ही क्या रहा है? खुलेआम नंग्योई के बाद सबको धमका रहे हैं बल। ओपन यूनिवर्सिटी का परीक्षा केन्द्र भी कालेज में है लेकिन क्या जो सुधार हो जाएगा? परीक्षा केन्द्र का वट्सएप ग्रुप बनाया गया और उसमें चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी ने अश्लील फोटो-फिल्म का लिंक भेज डाला। दाज्यू, हमने सोचा कि दूरस्थ शिक्षा में अब यही सब होता होगा लेकिन हंगामा मच गया। कर्मचारी लम्बे समय तक कालेज से गायब हो गया और कालेज प्रशासन ने अपना बचाव करने के अलावा चुप्पी साध ली। जो छात्र-छात्राएं दूरस्थ शिक्षा से भविष्य संवारने की सोच रहे हैं बांकी वह जानें। साहब लोगों की तनख्वाह तो समय पर निकल ही जायेगी बल।

उधर अल्मोड़ा पुलिस ने 160 टिन अवैध लीसे के साथ तस्करी के आरोपी को पकड़ लिया है। दाज्यू, सबको पता है कि लीसे के कारोबार में बनने वाले पहले ही बन चुके हैं। टनों के हिसाब से आग में भी स्वाहा हो चुका है। दालरोटी के जुगाड़ वाले छुटपुट बराबर धरे जाते रहे हैं। लीसा भी आखिर कितनों पर रहम करे।

एनईपी : प्रवेश नियमों में बदलाव

अब डीएससी मेजर और जीई माइनर विषय होगा

उच्चशिक्षा में एनईपी प्रवेश नियमों में बदलाव को लेकर हलचल है। इसी के तहत विश्वविद्यालयों ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है और बैठकों का दौर चलाकर शिक्षकों को भी इसकी जानकारी दी।

इसी क्रम में कुमाऊँ विश्वविद्यालय ने एनईपी के तहत विवि से सम्बद्ध कालेजों में प्रवेश के लिये नई गाइडलाइन जारी की है। जिसमें इस बार प्रवेश नियमों में कई बदलाव किये गये हैं। सबसे बड़ा बदलाव मेजर और माइनर विषयों के चयन को लेकर है। पिछले सत्र तक मेजर विषयों के चयन में तीन विषय किसी भी स्ट्रीम से लिये जा सकते थे लेकिन इस बार नए नियम के तहत विद्यार्थी अपनी स्ट्रीम के अनुसार ही मेजर विषय चुन सकता है। मेजर विषय का नाम बदल दिया गया है। अब इसे डिसीप्लिन स्पेसिफिक कोर्स (डीएससी) के नाम से जाना जाएगा। साथ ही माइनर विष्ज्ञय के चयन में भी अब बदलाव किया गया है। इसमें साइंस स्ट्रीम के विद्यार्थी आर्ट या कॉमर्स स्ट्रीम के विषय चुन सकता है। आर्ट स्ट्रीम वाला विद्यार्थी साइन्स या कॉमर्स से और कॉमर्स स्ट्रीम वाला साइन्स या आर्ट स्ट्रीम से विषय चुन सकता है। अब माइनर विषय को जनरल इलेक्टिव (जीई) नाम से जाना जाएगा।

पूर्व में वार्षिक शैक्षणिक सत्र के तहत भाषा से सम्बन्धित विषय लेना अनिवार्य था, जिसे एनईपी के तहत सेमेस्टर शैक्षणिक सत्र से हटा दिया गया था। लेकिन इस बार एनईपी में संशोधन कर इसे फिर से शामिल कर दिया गया है। इसके अलावा एबिलिटी इन्हान्समेंट कार्स (एईसी) के तहत प्रत्येक विद्यार्थी को पहले चार सेमेस्टर तक प्रत्येक सेमेस्ट में 2 क्रेडिट का एक-एक इन्हान्समेंट कोर्स कोर्स पूरा करना होगा। इसी तहत स्किल इन्हान्समेंट कोर्स (एसडीसी) के तहत छठे सेमेस्टर तक प्रत्येक सेमेस्टर में 2 क्रेडिट का एक-एक एसईसी पूरा करना होगा। कोर्स के तहत विद्यार्थी ने जिस स्ट्रीम का डीएससी (मेजर) चुना है, उसी विषय का स्किल इन्हान्समेंट कोर्स (एसईसी) भी करना होगा। इन दिनों प्रवेश के लिये ऑनलाइन पंजीकरण हो रहे हैं।

बग्वाल खेलने वाले योद्धाओं को जारी होंगे पहचानपत्र

देवीधुरा। बाराही धाम देवीधुरा में रक्षाबन्धन पर होने वाले बग्वाल युद्ध में शामिल होने वाले बग्वाली योद्धाओं के लिये इस बार पहचानपत्र अनिवार्य किया गया है।

पिछले वर्ष की तरह चारों खामों के वीर अलग-अलग पहनावे में रहेंगे। चार खाम व सात थोकों के प्रतिनिधियों की बैठक में यह निर्णय लिया गया। देवीधुरा मन्दिर समिति के महामंत्री रोशन लमगड़िया व हयात बिष्ट के संचालन में हुई बैठक में अगस्त में होने वाले बग्वाल मेले की तैयारी पर चर्चा की गई। तय किया गया कि बग्वाल के लिए मन्दिर को फूलों से सजाया जाएगा। संस्थापक सदस्य लक्ष्मण सिंह लमगड़िया ने मन्दिर की पवित्रता व दिव्यता बनाए रखने पर जोर दिया। चारों खामों के प्रमुखों ने एकजुटता व आपसी सहयोग के साथ मेले को सफल बनाने का संकल्प लिया।

इस बची मन्दिर में श्रीमद्भागवत कथा का भव्य आयोजन हुआ जिसमें चारों खामों के प्रतिनिधियों ने बारी-बारी से सेवा दी। मन्दिर से भव्य शोभायात्रा भी दर्शनीय रही।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास

जोहार का रारमैनसिंह, रारबोडियार मार्ग की डरावनी कहानी

जगदीश सिंह बृजवाल

मिलम जोहार घाटी यात्रा में मुनस्यारी से लगभग 10 किमी दूर उत्तर दिशा में लिलम गाँव (पड़ाव) नामक स्थान से पुरातन व अर्वाचीन दो मार्ग गाँव से पश्चिम की ओर का मार्ग पुमद्यो, खलकोट, रारमैनसिंह, बबलधार, ररगाड़ी, स्यूनी, बोगडियार लगभग दस-पन्द्रह किमी जिस मार्ग का उपयोग पंज्वारी काल के लोग करते थे, दस ढगरी, नौ बकरी। इसी मार्ग की कहानी है माल कहे जाने वाला मदकोट तक इन्हीं रास्तों से वे लोग पहुँचते थे।

अन्य दूसरा मार्ग गोरी गंगा के किनारे समानान्तर लिलम चकला ढुंगा से आगे तथा गोरी तथा रालमगंगा का संगम से कुछ दूर बरपटिया पुल, रूपसियाबगर, हानियां भेल, सिरकैरि भेल, बिलज्वाल गौन, पछपाल उडियार, ररगाड़ी, केमूउडियार, स्यूनी, ढिलमगां आज भी लोग जानकारी रखते हैं आधुनिक जोहारियों के द्वारा खोजा मार्ग कुछ सरल मार्ग हैं। जिसकी दूरी लगभग 12 किमी तक है इन्हीं दोनों मार्ग को जोहारी शौका रारिबोडियार से जानते हैं।

रारिबोडियार मार्ग अदम्य साहसी, कठिन परिश्रमी शौकाओं के लिए कैसे डरावनी सपने दिखाती थी, जिन्होंने कठिन से कठिन मार्ग अपने अनुरूप बनाए, किन्तु इस निश्चित मार्ग पर अकेले-दुकेले जाने में लोग भयभीत हो जाते थे। आगे विस्तृत जानकारी वर्णित करते हैं।

लिलम गाँव से पश्चिम दिशा की और से एक दम खड़ी चढ़ाई कठिन रास्ता, पुमद्यो, खलकोट लिपिसूरी गधेरा, रारमैनसिंह चढ़ाई किसी के लिए भी लेवा साबित हो सकता था। रारमैनसिंह, खलकोट क्षेत्र में ही गोरखाओं को 12 साल तक जोहार आने से जसपाल बुढ़ा ने रोक दिया, यही पर गोरखा जैसे आक्रान्ताओ की हिम्मत बोल गयी। 'दस ढगरी, नौ बकरी' चर्चित कहानी इसी मार्ग की है। रारमैनसिंह चोटी के पास लिपि-सारी नाम हमें 'सारी-ला स्वर्ग सा भूमि की परिकल्पना कराती है।

आधुनिक जोहारी युग के धामू रावत काल से आगे के लोगों द्वारा अति कठिन मार्ग को त्याग कर गौरी नदी के किनारे-किनारे गोरीगंगा के वार की तरफ का मार्ग प्रत्येक गरखाओं (जाति) के सहयोग से नया रास्ता बनाया गया। उन्हीं के नाम से रास्ते का नामकरण भी हुआ। मार्ग लिलम से बोगडियार (रारिबोडियार) कि कई अच्छी- बुरी कहानियाँ सुनने को आज भी मिलती है।

रारिबोडियार मार्ग आखिर डरावना क्यों था? एक ओर भयावह चट्टान तो दूसरी ओर नदी किनारे का संकरा मार्ग नदी में गिरने का भय, बीच-बीच में निंगाल के घने झुरमुट, जगंल के बीच जंगली जानवरों का खतरा, खासकर भालू-बाघ का डर, ररगाडी लागूं (भूत-प्रेत) का आंतक, जोहार जाने वाले शौका आपस में झगड़ा हो जोड़ने पर कहते थे-

'वैं औले रारबोगडियार' (रारबोगडियार में देख लेने की धमकी) कहते थे। रारबोडियार युद्ध भूमि जैसा भी कह सकते हैं।

स्यूनी ररगाडी से एक-ढेड़ किमी उत्तर की ओर स्यूनी जहाँ कैलाश यात्रा जाते समय एक संन्यासी वर्षाकाल में गुफा में विश्राम कर रहा था, जौकों के हमलों ने सन्यासी का खून चूसकर मृत्यु तक पहुँचा दिया, किवदन्ती आज भी सुनी जाती है। संयासी का जीव प्रेम जानलेवा सिद्ध हुआ।

इस मार्ग की विशिष्ट विशेषता- जोहार यात्रा के समय व्यापारी, अन्य प्रवासी परिवार अपने अवशेष सामानों का रारिबोडियार के रास्ते, गुफा में मोटे कपड़े (तिरपाल) से ढक देते थे, उसपर चिन्हित पत्थर, लकड़ी रख देते थे। अगले वर्ष उसे अपना सामान सुरक्षित मिल जाता था। व्यक्ति मजबूरी में निकृष्ट-से-निकृष्ट कार्य करने पर मजबूर हो जाता है किन्तु कहा जाता है कि जोहारियों के लिए यह लागू नहीं होता हैं- यहाँ सच्चाई, इमानदारी, मुंहवाणी बचन से जोहारी कभी समझौता नहीं करते थे।

रारबोगडियार क्षेत्र लगभग दस-बारह किमी लम्बाई ठीक हंसलिग पर्वत की तलहटी में गोरी गंगा के वार-पार का क्षेत्र है। जाते-जाते समय हंसलिग देव की पूजा-अर्चना की जाती है इस पर्वत के ठीक उपर शिवलिंग प्रतिरूप में हैं। इसके पथरीली पहाड़ियों पर अकसर हिमालयी जानवर-थार थरीन, कस्तूरीमृग, हिरण आदि जानवर दूर से विचरण करते साफ नजर आते रहते हैं।

'रारिबोगडियार मार्ग' का अपने आप में रोचकता भरा इतिहास कौतूहलपूर्ण, स्मृतियों को संजाऐ रखना अति आवश्यक समझते हैं। यही लेखक का प्रयास, मार्मिकता का भाव है।

ज्योतिष की बातें- 234

29 जून 2025 को शुक्र स्वराशि वृषभ में प्रवेश करेगा, जिस पर मित्रग्रह शनि की दृष्टि भी होगी। इस समय शुक्र मार्गी भी है और उदित भी, अतः शुक्र अत्यन्त शुभ हो रहा है। फलदीपिका के अनुसार शुक्र छठवें, सातवें और दसवें स्थान के अतिरिक्त अन्य सभी स्थानों पर शुभफल प्रदान करता है साथ ही मकर और कुम्भ राशियों के लिए शुक्र योगकारक भी होता है। अतः अगले 28 दिन शुक्र सांसारिक सुख, प्रेम प्रकरण, विवाह, दाम्पत्य जीवन, काव्य रचना, स्वास्थ्य, रत्न, वस्त्र-आभूषण, धन-धान्य आदि अपने कारक विषयों में मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ व मीन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य तीन राशियों के लिए भी सामान्य फलदायक होगा।

शुक्र का यह गोचरफल केवल शुक्र के गोचर के आधार पर लिखा गया है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विवेचन उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 124

मालिक बनते गए नौकर

मोहल्ले में एक छोटी सी दुकान थी। आसपास के लोग वहाँ से ही सामान खरीदते थे। वह दुकानदार मोहल्ले का बड़ा आदमी माना जाता था। फिर एक दिन उसके बगल में एक बहुत बड़ी दुकान खुल गई तो फिर सभी लोग उस बड़ी दुकान से सामान लेने लगे। छोटी दुकान वाले की दुकानदारी ठप्प हो गई। कुछ समय बाद उस एरिया में एक मॉल खुल गया जहाँ पर हर प्रकार की चीज मिलती थी। फिर आसपास के सभी लोग उस मॉल से ही अपने जरूरत की सभी सामग्री लेने लगे। इस कारण आसपास की लगभग सभी दुकानें ठप्प हो गईं। उन दुकानों में जो नौकर थे उनमें से कुछ को तो उस मॉल में काम मिल गया बाकी सभी बेरोजगार हो गए। जो लोग अपनी-अपनी दुकानों के मालिक थे वे सभी किसी दूसरे व्यवसाय की तलाश में लग गए। इतने पर भी मामला नहीं रुका। फिर एक दिन किसी बड़े उद्योगपति का बहुत बड़ा मॉल उस शहर में खुला जिसमें सब्जी से लेकर फ्रीज टीवी तक सभी आइटम उपलब्ध थे। इस कारण शहर के सभी लोग उस पूरे मार्केट जैसे मॉल से ही सामान खरीदने लगे और शहर की छोटे-बड़े मॉल, छोटी-बड़ी दुकानें सब के सब धीरे-धीरे ठप्प होते चले गए। इस प्रकार जो अपनी-अपनी दुकान के मालिक थे, बड़े आदमी माने जाते थे, सब धीरे-धीरे गरीब हो गए। उन दुकानों में काम करने वाले कुछ नौकरों को तो उस मार्केटनुमा मॉल में काम मिल गया। बाकी सब बेरोजगार होकर कोई दूसरे काम की तलाश में भटकने लगे। इस प्रकार धीरे-धीरे आम आदमी का पैसा सिमट कर किसी बड़े पूंजीपति कार्पोरेट की जेब में चला गया। इसी प्रकार का वातावरण अब आगे चलकर खेती आदि अन्य व्यवसायों का भी होने वाला है। जनता को अभी से जागरूक होने की आवश्यकता है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

अभी इन्तजार

सपना बनी मेट्रो ट्रेन, करोड़ों खर्च भी हुए एक ईंट तक नहीं लगी

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

देश में नियो मेट्रो दौड़ाने का सपना देख रहे दून की उम्मीदों पर अभी इन्तजार के बादल छाये हुए हैं। चार साल पहले सरकार ने मेट्रो ट्रेन चलाने का ऐलान किया था, मेट्रो के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च भी किए गए लेकिन सच्चाई यही है कि मेट्रो के लिए अभी तक एक ईंट भी नहीं लगी है। पिछले चार सालों से उत्तराखण्ड में मेट्रो के नाम पर केवल बातें की जा रही हैं और मेट्रो प्रोजेक्ट अधर में लटका दिखाई दे रहा है।

वर्ष 2017 में दून ने मेट्रो रेल का एक हसीन ख्वाब देखा था। सरकार ने भी झटपट उत्तराखण्ड मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन का गठन कर डाला। हाथों-हाथ देहरादून से लेकर हरिद्वार, ऋषिकेश व मुनिकीरेती तक मेट्रोपोलिटन क्षेत्र घोषित कर दिया गया। करीब दो साल के अथक प्रयास के बाद परियोजना की डीपीआर बनाई गई और तय किया गया कि पहले चरण में करीब पाँच हजार करोड़ रुपये की लागत से दून में आइएसबीटी से कंडोली व एफआरआइ से रायपुर के कारीडोर का निर्माण किया जाएगा। इसके लिए तमाम संसाधन जोड़े गए और पाँच करोड़ रुपये से अधिक की राशि खर्च करने के बाद अब मेट्रो का सफर लगभग समाप्त भी हो गया है। इसी वर्ष नई सरकार आई। स्टडी के लिए विदेश तक के टूर हुए। लेकिन, करीब 7 वर्ष का समय पूरा हो गया है।

राजधानी दून में वाहनों व प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। सरकार 7 सालों से मेट्रो संचालन की बात कह रही है। मेट्रो के नाम पर हर साल करोड़ों रुपए खर्च हो रहे हैं। क्या दून में मेट्रो का सपना पूरा होगा? जनवरी 2024 में तत्कालीन सीएस की अध्यक्षता में मेट्रो को लेकर बैठक हुई। जिसें मेट्रो की कम सम्भावनाओं के बीच पाड कार को लेकर सर्वेक्षण के लिए कहा गया। जबकि, उत्तराखण्ड मेट्रो रेल कारपोरेशन ने दून में नियो मेट्रो को लेकर प्रस्ताव दिया था। जिसके बाद केन्द्र को प्रस्ताव भेजा गया। अब तक इस पर स्थिति साफ नहीं है। सरकार हरिद्वार पीआरटी संचालन पर भी तैयार थी। यूकेएमआरसी ने निविदा निकाली लेकिन अब तक कोई कम्पनी सामने नहीं आई। अब तय किया गया है कि हरिद्वार व दून पीआरटी का निर्माण हाइब्रिड एन्यूटी मॉडल (हैम) के तहत करेगी। मंथन हुआ सरकार डेवलपर को प्रोजेक्ट में होने वाले खर्च का 40 प्रतिशत भुगतान काम शुरू होने से पहले कर देती है। बाकी 60 प्रतिशत डेवलपर को खुद लगानी होती है। 15 साल बाद अगर डेवलपर को घाटा हुआ तो 60 प्रतिशत राशि प्रतिवर्ष 80 से 100 करोड़ डेवलपर को लौटा देगी। मेट्रो रेल कार्पोरेशन के अनुसार नियो मेट्रो प्रोजेक्ट करीब 1900 करोड़ रुपये की थी। डीपीआर राज्य के बाद फाइनल टच देने के लिए केन्द्र को भेजी गई। प्रोजेक्ट में राज्य व केन्द्र 20-20 प्रतिशत बजट देंगे। बाकी 60 परसेंट राशि लोन से जुटाई जाएगी। मेट्रो कारपोरेशन के कार्यालय में इस समय 28 कर्मचारी काम कर रहे हैं। कारपोरेशन का कार्यालय भी किराए पर है। उसके बाद कर्मचारियों की सैलरी, आफिस किराया समेत अन्य खर्चों पर तकरीबन सरकार हर महीने 55 से 60 लाख खर्च करती है। इसके अलावा मेट्रो के नाम पर अलग-अलग लेटेस्ट टेक्नोलाजी की आड़ में मंत्री और अधिकारी कई विदेश दौरे भी कर चुके हैं लेकिन देहरादून में मेट्रो प्रोजेक्ट का रिजल्ट शून्य है। सरकार को यह बताना होगा कि नियो मेट्रो के संचालन के लिए धनराशि कैसे जुटाई जाएगी। क्योंकि केन्द्र सरकार पहले ही दून की मेट्रो को ठण्डे बस्ते में डाल चुकी है। इस नाउम्मीदी से पहले केन्द्र सरकार ने ही परियोजना की उम्मीद जगाई थी। उसी जोश में 08 जनवरी 2022 को नियो मेट्रो की डीपीआर राज्य कैबिनेट से पास कर चार दिन के भीतर ही 12 जनवरी को डीपीआर केन्द्र सरकार को भेज दी गई थी। लेकिन दो साल बाद भी जब केन्द्र ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई या इशारों में इन्कार कर दिया तो राज्य ने अपने बूते इसे धरातल पर उतारने का दम्भ भरा। प्रस्ताव को मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाले पब्लिक इन्वेस्टमेंट बोर्ड (पीआइबी) के समक्ष भी रखा जा चुका है परन्तु वित्त विभाग परियोजना पर 2300 करोड़ रुपए की भारीभरकम धनराशि खर्च करने का साहस नहीं जुटा पा रहा है। वहीं इसके पीछे राजनीतिक लोगों की कमजोर इच्छा शक्ति और अधिकारियों में दूरदर्शिता की कमी भी साफ तौर पर देखी जा सकती है।

दूसरी तरफ 31 जनवरी 2025 को जब मेट्रो का ताना बाना बुनने वाले प्रबन्ध निदेशक की कुर्सी से बिना एक्सटेंशन के रिटायर हुए तो रही सही उम्मीद भी धूमिल हो गई थी। हालांकि इसके बाद निदेशक प्रोजेक्ट को कार्यवाहक एमडी की जिम्मेदारी देकर किसी तरह कारपोरेशन की गाड़ी खींची गई और अब वह भी अब इससे उतर चुके हैं। एमडी विहीन हो गया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जोड़ मेले में उमड़े श्रद्धालु

चम्पावत। लधिया और रतिया नदी के संगम पर स्थित पावन सिख तीर्थ गुरुद्वारा रीठा साहिब में तीन दिवसीय जोड़ मेले का भव्य आयोजन हुआ। मेंले में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उमड़े। इस अवसर पर गुरुद्वारा प्रबन्धक बाबा श्याम सिंह, कार सेवा प्रमुख बाबा बच्चन सिंह, बाबा सुरेन्द्र सिंह

दमुवाढूंगा मामले में विधायक का ज्ञापन

हल्द्वानी। विधायक सुमित हृदयेश ने आयुक्त दीपक रावत को ज्ञापत देते हुए प्रशासन पर गम्भीर आरोप लगाया है। उन्होंने आयुक्त से अपील की कि ग्राम वासियों को अपना कब्जा प्रमाणित करने का मौका दिया जाए। कहा शासनादेश होने के बावजूत दमुवाढूंगा वालों को प्रशासन द्वारा डराया जा रहा है। कहा वह जनता के हक की लड़ाई लड़ते रहेंगे।

पंतनगर एयरपोर्ट का विस्तारीकरण

देहरादून। पन्तनगर एयरपोर्ट के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का एयरपोर्टबनाने के लिये नागरिक उड्यन सचिव समीर कुमार सिन्हा ने मुख्य सचिव को पन्तनगर एयरपोर्ट में नए निर्माण के लिये 6 माह के भीतर निर्माण प्रकिया को कहा है। इन दिनों भूमि अधिग्रहण का कार्य जारी है।

सर्वे की मांग को लेकर विधायक को ज्ञापन

हल्द्वानी। दमुवाढूंगा वासियों ने विधायक बंशीधर भगमत को ज्ञापन सौंपकर मालिकाना हक के लिये सर्वे फिर से शुरू करवाने की मांग की है। ग्रामीणों के प्रतिनिधि मण्डल ने विधायक को बताया कि रिक्त प्लाटों पर सरकारी भूमि के बोर्ड लगाए जा रहे हैं जिससे क्षेत्रवासियों में भय है।

जसपुर में सड़कों का जाल

जसपुर। नगर पालिका द्वारा प्रत्येक वार्ड में सड़क कार्य के साथ ही 46 सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। चैयरमैन हाजी मो.नौशाद सम्राट ने बताया कि बोर्ड गठित होते ही सभासदों ने सड़कों के प्रस्ताव दिये, ऐसे में सबसे पहले सड़कों का कार्य किया जा रहा है जो एक माह में पूरा हो जाएगा।

मेयर बाली ने किया सड़कों का शिलान्यास

काशीपुर। मेयर दीपक बाली ने विभिन्न वार्डों में एक करोड़ 40 लाख 51 हजार रुपये से बनने वाली 11 सड़कों का शिलान्यास किया। महापौर ने वार्ड 33, 3, 4 15 आदि की सड़कों व टाइल्स सड़क व नाली निर्माण कार्यों का उद्घाटन करते हुए कहा कि गुणवत्ता के साथ ही बरसात के सीजन को देखते हुए समय से यह कार्य होना सुनिश्चित किया जाए। बताते चलें कि पूर्व विधायक व मेयर के बीच खींचतान भी जारी है।

कैंची में अजब-गजब : हाईवे में जाम और धक्कामुक्की का मंजर

जाम में हांफता रहा पर्यटन सीजन

शासनिक-प्रशासनिक जाम में फंसा प्रदेश

नैनीताल। भवाली-अल्मोड़ा हाईवे पर कैंची मन्दिर में इस बार भी मेला जोरदार तरीके से मनाया गया जिसमें प्रशासन व पुलिस को व्यवस्था बनाने में लगातार जूझना पड़ा। इसके अलावा कैंची में दो साल से अजब-गजब हाल बना हुआ है। मुख्य मार्ग में सैकड़ों वाहनों की कतार लगने से काफी परेशानी होने लगी है। वाहनों के अलावा कैंची मन्दिर में दर्शन के लिये ग्रीष्म के सीजन में जिस तादात में लोग उमड़े उससे ध क्कामुक्की का मंजर दिखाई दिया। ऐसी भी क्या श्रद्धा की एक-दूसरे को ध कियाते हुए भीड़ बनकर अव्यवस्था फैल रही हो। भीड़भाड़ के कारण लम्बी यात्रा पर निकले यात्री, बीमार को ले रहा वाहन, स्कूल जाने वाले बच्चे, कार्यालय जाने वाले कर्मचारी सभी दिक्कत का सामना करते हैं। बाबा नीम करौली के लिये आस्था होना एक बात है लेकिन आस्था की आड़ में तफरी करने वालों की भीड़ से पूरा वातावरण दूषित हो रहा है। सड़क पर ही आड़े-तिसरे वाहन खड़े कर रील बनाने वाले पर्यटकों से सब परेशान हो चुके हैं।

नैनीताल, भवाली रोड पर जाम राज्य सरकार पर कांग्रेस ने भी हल्ला बोला है। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि प्रदेश के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर ट्रैफिक जाम अब आम हो चुका है। सरकार के पास इस समस्या के समाधान के लिये कोई रोडमैप नहीं है। कहा नैनीताल, भीमताल मार्ग पर लगभग समूचे पर्यटन सीजन में वाहनों की लम्बी कतारें लगी रहती हैं। पूरा प्रदेश शासनिक व प्रशासनिक जाम में फंसा है। कैंचीधाम में जाम की वजह क्वारब व अन्य क्षेत्रों में सड़े बदत्तर होना भी है। इसका खामियाजा व्यापारियों के साथ-साथ मरीजों, गर्भवती महिलाओं और बच्चों को भुगतना पड़ता है।

काशीपुर में चीमा चौराहे का नाम अग्रसेन चौक रखने का प्रस्ताव-स्वागत

काशीपुर। क्षेत्र की राजनीति में पासे पलटते जा रहे हैं। महानगर के मेयर और पूर्व विधायक के बीच चल रही रार के बीच बड़ा निर्णय हुआ है कि चीमा चौराहे का नाम बदल कर अग्रसेन चौक होगा। इसका प्रस्ताव होते ही वैश्य समाज ने मेयर बाली का स्वागत किया। पूर्व विधायक हरभजन सिंह चीमा लगातार मेयर पर विकास की जगह दूषित वातावरण करने का आरोप लगा रहे हैं।

कुमाऊं वैश्य महासभा के सदस्यों ने महापौर दीपक बाली के पास जाकर उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा के अलावा चीमा चौराहे का नाम महाराजा अग्रसेन चौक करने की मांग की। कहा यह पुरानी मांग है। इस पर बोर्ड की ओर से शासन को प्रस्ताव भेजने की जानकारी दी गई और बताया कि चौक को भव्य बनाया जाएगा। वैश्य महासभा ने पार्षदों का भी आभार प्रकट किया है। इस मौके पर महासभा के संरक्षक एसपी गुप्ता, एकके सितारा, एमपी गुप्ता, केसरी बंसल, सुरेश गोयल, अनिल अग्रवाल, आनन्द वैश्य, ईश्वर गुप्ता उपस्थित थे।

रानीखेत में टेलीस्कोप्स की स्थापना

रानीखेत। पर्यटक नगरी रानीखेत में छावनी परिषद ने नई दिशा और पहचान की ओर कदम बढ़ाते हुए बहुउद्देशीय भवन में उच्चश्रेणी टेलीस्कोप्स की स्थापना की है। इसके अस्तित्व में आते ही अब पर्यटक व आम नागरिक रात में खगोलीय घटनाओं का अवलोकन कर सकेंगे।

परिषद द्वारा एस्ट्रोस्टॉम के तकनीकी सहयोग से विकसित की गई यह अत्याधुनिक खगोलीय वेधशाला का मुख्य उद्देश्य खगोल विज्ञान को आम लोगों के लिये सुलभ बनाना और रानीखेत के पर्यटन को विज्ञान से जोड़ते हुए एक नया अध्यन शुरू करना है।

छावनी परिषद बहुउद्देशीय भवन में हिमालयन एस्टल आब्जर्वेटरी का उद्घाटन करते हुए बतौर मुख्य अतिथि केआरसी कमाण्डेंट बिग्रेडियर व घवनी पदेन अध्यक्ष संजय कुमार यादव, वीएसएम ने फीता काटकर किया। कार्यक्रम में परिषद के सीईओ कुनाल रोहित, आईडीईएस व छावनी परिषद नामित सदस्य मोहन नेगी उपस्थित थे। सभी ने इस पहल की सराहना करते हुए रानीखेत के लिए एक ऐतिहासिक क्षण बताया। यहां आब्जर्वेटरी परिसर द्वारा एक खगोलीय म्यूजियम भी बनाया गया है।

पिथौरागढ़ मेयर-विधायक खींचतान जारी

पिथौरागढ़। नगर निगम चुनाव के समय से ही मेयर और विधायक के बीच जिस प्रकार की खींचतान चल रही थी वह अभी जारी है। असल में विधायक मयूख महर अपनी ही पार्टी और भाजपा दोनों ओर ललकार चुके हैं। ऐसे में उनके पास सवाल हैं और वह अपने समर्थकों के बल पर ताकत की बात कर रहे हैं।

उन्होंने अति व्यस्त केमू स्टेशन में हाईटेक शौचालय को तोड़ दिये जाने पर सवाल उठाए हैं। कहा कि इससे नगर निगम और प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठने ही हैं। उन्होंने धन की बन्दरबांट का आरोप लगाते हुए कहा कि इस मामले में जल्द सकारात्मक कदम नहीं उठाया गया तो जनसरोकार के इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाया जाएगा। भारी जन दबाव को देखते हुए केमू में शौचालय का निर्माण कराया गया था। इसमें लाखों रुपये की राशि खर्च हुई थी, जिसे एक झटके में तोड़ दिया गया।

शूटिंग विलेज कांसेप्ट का शुभारम्भ

पिथौरागढ़। मुख्यालय के निकट पाभै गाँव में शुटिंग विलेज कांसेप्ट का सिने अभिनेता हेमन्त पाण्डेय ने शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि राज्य सरकार के प्रयासों से उत्तराखण्ड बेस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। कई फिल्मों का निर्माण प्रदेश में हो रहा है जिसकी वजह से स्थानीय कलाकारोंऔर तकनीशियनों को भी फायदा मिल रहा है। कहा कि इसी तरह से राज्य के अन्य जनपद के ग्रामों को भी फिल्म सर्किट शूटिंग विलेज से जोड़ते हुए राज्य के खूबसूरत गाँव को शूटिंग विलेज बनाया जाएगा और फिल्म प्रोडक्शन के लिए विभिन्न सुविधाएं भी उपलब्ध की जाएंगी। श्री पाण्डेय का मानना है कि फिल्मों की शूटिंग को और बढ़ावा मिलने के साथ ही पर्यटन गतिविधियों में बढ़ोत्तरी होगी। कहा कि फिल्म नीति 2024 ने राज्य में फिल्म शूटिंग के लिए एक बेहतरीन माहौल बना हुआ है। इसके तहत बड़ी संख्या में फिल्म निर्माता उत्तराखण्ड की ओर रुख कर रहे हैं इससे उन्हें सहूलियतें और सब्सिडी लाभ भी मिल रहा है।

लोकसाहित्य होगा डिजिटलाइज

देहरादून। सचिवालय में उत्तराखण्ड भाषा संस्थान की साधारण सभा एवं प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति की बैठक के अध्यक्षता करते हुए सीएम पुष्कर सिंह धामी ने बताया कि प्रदेश का लोक साहित्य का डिजिटलाइज होगा। क्षेत्रीय बोलियों को बढ़ावा देने के लिए मोबाइल एप, पॉडकास्ट और ई-लर्निंग कोर्सेस शुरू करने हेतु भी निर्देशित किया। बताया कि साहित्य सम्मान राशि भी बढ़ा दी है।

कवीन्द्र ने डरबन में जीता गोल्ड मैडल

मुनस्यारी। तल्ला दुम्मर निवासी कवीन्द्र सिंह बृजवाल ने 90. किमी कामरेड मैराथन में गोल्ड मैडल जीता है। कवीन्द्र लगातार पिछले दो वर्षों से डरबन में विश्व के सबसे पुराने कामरेड मैराथल में प्रतिभाग कर गोल्ड मैडल जीता। कवीन्द्र वर्तमान में टाटा कम्पनी में मोटीवेटर के पद पर तैनात हैं। उनकी उपलब्धि पर पिता भूपाल सिंह बृजवाल सहित क्षेत्रवासियों ने खुशी प्रकट की है।

परिक्रमा

तीन मंजिली पार्किंग बनेगी

पिथौरागढ़। चण्डाक के पास भूस्खलन के कारण रुका हुआ पार्किंग का कार्य अब लोनिवि के कार्यालय की भूमि पर होगा। लोनिवि कार्यालय को आवासीय भवन में शिफ्ट किया जायेगा। बताते चलें कि इसके लिये लम्बे समय से कवायद चल रही थी। अब टकाना स्थित लोनिवि भवन शिफ्ट होने के साथ ही तीन मंजिली पार्किंग बनेगी।

आदि कैलास मार्ग पर वाहन न रोकें

धारचूला। आदि कैलास यात्रा मार्ग पर स्थानीय टैक्सी वाहन स्वामी और परिवहन विभाग आमने-सामने हैं। टैक्सी वाहन स्वामियों ने बैठक कर जौलजीवी से बाहर के आने वाहनों को आदि कैलास, पंचाचूली, नारायण आश्रम यात्रा पर जानेपर रोक लगाने का निर्णय लिया जबकि परिवहन विभाग का कहना है कि वैध दस्तावेज वाले वाहनों को यात्रा पर जाने से नहीं रोका जा सकता है। व्यास जनजाति संघर्षसमिति, व्यास टैक्सी यूनियन का का कहना है कि इसमें स्थानीय लोगों का रोजगार जुड़ा है। इस पूरे विवाद पर प्रशासन ने चेताया है कि वाहनों को रोकने पर कार्रवाई होगी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

द्रोपदी : अन्याय.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

जो अपमान का एक अंश तक सहन नहीं कर पाती। और करे भी क्यों? क्या नारी होने के कारण उस पर यह अतिरिक्त भार पड़ जाता है कि वह पुरुष के या किसी के भी अपमान को सहन करती चली जाए? हमारे इतिहास के दो महानतम नारी पात्र सीता और द्रौपदी, जो अपने अपने कारणों से हमारी जातीय स्मृतियों में अद्भुत स्थान बना चुके हैं, एक दूसरे के विपरीत ध्रुव पर खड़े नजर आते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि नैतिकता और चरित्र के जिस शिखर पर सीता आरूढ़ है द्रौपदी उससे कहीं नीचे है। बल्कि पाँच पाण्डवों को वैध और समान रूप से पत्नी सुख देने वाली द्रौपदी भी नैतिकता और सच्चरित्र के उसी शिखर पर महानारियों को अलग-अलग ध्रुव मानने का कारण यह है कि जहाँ सीता हैं। इन दोनों महानारियों को अलग-अलग ध्रुव मानने का कारण यह है कि जहाँ सीता ने पुरुष समाज के अन्याय की अनदेखी करने को मानो अपना धर्म बनाया तो वहाँ द्रौपदी ने ऐसे किसी भी अन्याय का पूरी तरह से प्रतिकार करने का विकल्प चुना। अन्याय से निपटने का आपका तरीका आपके स्वभाव और जीवन के प्रति दृष्टिकोण से अनुप्राणित होता है। चूँकि स्वभाव के धरातल पर एकरूपता और समानता कभी सम्भव नहीं है, इसलिए सीता और द्रौपदी को असंख्य समर्थकों और अनुयायियों के मिलने की सम्भावना हमेशा अक्षुण्ण रहेगी। इसमें भी एक अजीब बात यह है कि समाज कभी इन बातों से विशेष प्रभावित नहीं होता कि आपने अन्याय का प्रतिरोध किया है याकि उसकी अनदेखी करने का फैसला किया है। अनदेखी करने वाले को कमजोर मानकर उसके प्रति अन्याय होता रहता है तो प्रतिरोध करने वाले से खुन्दक में और ज्यादा अन्याय होता रहता है। सीता और द्रौपदी लगातार अन्याय का शिकार हुई तो उसके पीछे के कारण ढूँढने कोई बहुत दूर नहीं जाना पड़ता। पर प्रतिरोध करने वाला अगर अकेले दम पर नायकत्व हासिल कर ले तो इसमें क्या आश्चर्य? और ठीक इसलिए अन्याय के खिलाफ हर वक्त प्रतिरोध की मानसिकता वाली द्रौपदी को अगर इतिहास की संघर्षशील ताकतों ने अपना नायक और प्रेरणास्रोत मान लिया हो तो क्या आश्चर्य?

पिता ने शर्त बाँध दी कि जो कोई छत पर झूलती यन्त्र मछली की आँख फोड़ देगा, उसी से द्रौपदी का विवाह हो जाएगा। द्रुपद ने यह असम्भव जैसी शर्त इसलिए बाँध दी क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि अर्जुन के अलावा कोई दूसरा इस शर्त को पूरा नहीं कर पाएगा और उनकी परम इच्छा थी कि अर्जुन से ब्याही जाए। पर कर्ण? वे भी तो इतने ही बड़े धनुर्धर थे जितने अर्जुन थे। वे शर्त पूरी करने के लिए मैदान में उतरे भी थे। पर चूँकि द्रौपदी को कर्ण से शादी नहीं करनी थी, सो उसने तमाम शर्तों के दायरों को लाँघकर फैसला सुना दिया कि वह कर्ण से विवाह नहीं करेगी। अपनी मनमर्जी के खिलाफ विवाह करने में बाँधने वाली शर्त को द्रौपदी ने कोई महत्व नहीं दिया और अपने व्यक्तित्व का सिक्का जमा दिया। एक घटना काम्यक वन में घटी जहाँ पाण्डव वनवास कर रहे थे। उनकी अनुपस्थिति में जब जयद्रथ द्रौपदी का अपहरण कर भागने लगा और अन्ततः पाण्डवों द्वारा पराजित कर बन्दी बना लिया गया तो जानते हैं द्रौपदी ने जयद्रथ को क्या सजा दी? उसका सिर पाँच जगह से मुंडवा कर उसे ऐसा अपमानित किया कि बदला लेने की इच्छा से वह जंगल में साधना करने चला गया। फिर आया चीरहरण प्रसंग। दुश्शासन ने द्रौपदी को बालों से पकड़ कर खींचना शुरू किया तो प्रतिकार स्वरूप भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि वह युद्ध में दुश्शासन की छाती का लहू पीएगा। कहीं भीम अपनी प्रतिज्ञा भूल न जाए और द्रौपदी के अपमान का बदला न लिया जा सके, इसलिए द्रौपदी ने भी प्रतिज्ञा कर दी कि जब तक उसके बालों को दुश्शासन के रक्त से धोया नहीं जाएगा वह केश खुले रखेगी और उन्हें वेणी में नहीं बांधेगी। हम जानते हैं कि भीम और द्रौपदी दोनों ही अपनी-अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी करके माने। द्रौपदी के प्रतिशोध के स्वभाव की तीसरी अभिव्यक्ति महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद हुई, जब अश्वत्थामा के हाथों उसके पाँचों पुत्र सोते मार डाले गए। द्रौपदी ने अश्वत्थामा को तभी माफ किया। (क्योंकि वह उसके पतियों के गुरु का पुत्र था।) जब भीम और अर्जुन ने उसके माथे की मणि निकाल ली अर्थात उसे पूरी तरह निस्तेज कर दिया।

ऐसे चमत्कारी चरित्र वाली द्रौपदी को अपने जीवन के बाल्य और कैशोर्य काल में पिता से कैसा प्रशिक्षण मिला होगा उसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। पिता द्रुपद अपने बचपन के सखा द्रोण से अपमानित हुए थे, हालांकि वे स्वयं भी इससे पहले द्रोण का भरपूर अपमान कर चुके थे, पर द्रुपद को मिले अपमान में डंक यह था कि साबित हो गया कि द्रुपद द्रोण को युद्ध में परास्त नहीं कर सकते। बस अब द्रुपद के जीवन का एक ही लक्ष्य हो गया- अपने बच्चों का अपमान के विरुद्ध प्रतिकार करने का मानस बनाना। जिस यज्ञ की अग्नि से दोनों भाई बहिनों के उत्पन्न होने की अजीबोगरीब कल्पना की गई है, उसी में निहित है कि पिता द्रुपद ने अपनी इन दोनों सन्तानों को पूरे बाल्यकाल और किशोरावस्था में अन्याय से लड़ने का, द्रोण से बदला लेने का, अस्त्र शस्त्रादि के प्रयोग का, मनोबल बढ़ाने का कोई ऐसा कठोर परीक्षण चुपचाप दिया जो अपने आप से एक पूरी साधना, पूरे यज्ञ से कम नहीं था। एक अग्नि परीक्षा से कम नहीं था। यह द्रुपद जैसे प्रतापी और बुद्धिमान पांचाल नरेश के लिए कोई कठिन नहीं था कि उसने अपने चरित्र की कमजोरियों से अपनी सन्तानों को मुक्त करने का बीड़ा उठाया। जहाँ धृष्टद्युम्न का जीवन द्रोण के अन्त को समर्पित हो गया, वहाँ द्रोपदी के रूप में हम भारतवासियों को एक विराट आदर्श मिला, अन्याय को किसी भी सूरत में सहन न करने का। पर द्रौपदी के विपुल चरित्र का यह एक पहलू भर है। द्रौपदी अन्यथा भी महाभारत काल का एक अद्वितीय नारी चरित्र है।

(साभार नवभारत टाइम्स)

स्व. बाला सिंह पांगती स्मृति स्कॉलरशिप प्रदान की

मुनस्यारी। 'आओ अपने गाँव से जुड़ें' कार्यक्रम के तहत राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय दरकोट तथा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दरकोट के आठ विद्यार्थियों को पूर्व ग्राम प्रधान व सुधारक बाला सिंह पांगती स्कॉलरशिप से सम्मानित किया गया। स्व. बाला सिंह जी की पुण्य स्मृति में उनके पुत्रगणों डा. कुन्दन सिंह पांगती, नवराज सिंह पांगती, कवीन्द्र सिंह पांगती ने विद्यालय के मेधावियों को स्कॉलरशिप प्रदान का उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। छात्रवृत्ति पाने वालों में कक्षा एक की छात्रा लक्ष्मी को 73 प्रतिशत अंक, कक्षा 2 के पार्थ को को 65 प्रतिशत अंक, कक्षा 3 की अंजलि को 62प्रतिशत, कक्षा 4 की सांची को 72प्रतिशत अंक, कक्षा 5 की भूमिका को 65प्रतिशत अंक, कक्षा 6 की आरुषि को 73 प्रतिशत अंक, कक्षा 7 की लक्षिता को 69प्रतिशत, कक्षा 8 की दिया को 71प्रतिशत अंक लाने पर यह छात्रवृत्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बाला सिंह पांगती के परिजनों के साथ ही क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

जोहार क्लब का.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

गंगा सिंह नित्वाल जोहार सांस्कृतिक संगठन लखनऊ, शाखा प्रबन्धक एलआई सी डीडीहाट हेमचन्द्र कसनियाल, प्रभागीय वनाधिकारी बागेश्वर ध्रुव सिंह मर्तोलिया, एसटीओ व्यापार कर अल्मोड़ा प्रकाश सिंह धर्मशक्तू, पूर्व सेनानायक भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल महेश सिंह धर्मशक्तू, कर्नल मंगल सिंह सयाना, मण्डलीय प्रबन्धक कैनरा बैंक हल्द्वानी भगवान सिंह बरफाल, एलआईसी हल्द्वानी डिविजन के मार्केटिंग मैनेजर कवीन्द्र सिंह पांगती, जोहार सांस्कृति संगठन पिथौरागढ़ के अध्यक्ष भूपाल बर्फाल, कैप्टन भूपेन्द्र सिंह पांगती इत्यादि रहे।

खेलोत्सव में हुए बैटमेंटन टूर्नामेंट में 23 बालिकाओं ने प्रतिभाग किया। फाइनल मुकाबला हर्षिता धामी व हर्षिता पाना के बीच खेला गया जिसमें हर्षिता धामी विजेता रही।

मैराथन का अकर्षण इस बार भी रहा। स्व. सत्यवान सिंह रावत मेमोरियल मिनी मैराथन के सीनियर बालक वर्ग में विजेता रहे- जीवन सिंह पिथौरागढ़, राहुल बोरा रानीखेत, जितेश जाट पिथौरागढ़, महेश नाथ मदकोट, बाला कुमार हरकोट। सीनियर बालिका वर्ग में माया कुमार पिथौरागढ़, मीना कोरंगा पिथौरागढ़, दीपिका सामन्त, किरन, हेमलता तिवारी सफल रहे। जूनियर बालक वर्ग में कैलाश कुमार, गोविन्द सिंह धामी पिथौरागढ़, लवराज कुमार बूंगा, हिमांशु बिष्ट नानासेम, पुनीत भण्डारी दूनामानी सफल रहे। जूनियर वर्ग बालिका में खुशबू जोशी पांखू प्रथम रही। इस वर्ग में एक ही प्रविष्टि प्राप्त हुई, जिसे सीनियर बालिका वर्ग के साथ भागीदारी दी गई। सीनियर वर्ग में वह छठे स्थान पर रही। जीआईसी मुनस्यारी द्वारा भी स्थानीय विजेता धावकों को पुरस्कृत किया गया। इनमें महेश नाथ मदकोट, बाला कुमार हरकोट, पंकज तोमक्याल तोमिक, श्वेतादीप मल्ला घोरपट्टा, गुंजन दशौनी नाचनी थे। इन्हें मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू व जोहार क्लब के पूर्व सचिव गोकर्ण सिंह मर्तोलिया ने सम्मानित किया। बालीबाल प्रतियोगिता के लिये इस बार क्लब में 21 टीमों का प्रतिभाग करना भी सुखद है।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मौसम का मिजाज

सावधान! मूसलाधार बारिश और गिरता मलबा

मानसून के इस सीजन का मिजाज समय से पहले ही बनने लगा था। अब जबकि गरज-बरस तेज होने लगी है पर्वतीय मार्गों पर यात्रियों को सावधान रहना होगा। मूसलाधार बारिश और गिर रहे मलबे से कई जगह दिक्कत हो रही है।

टनकपुर-लौलजीबी मार्ग पर मलबा गिरने से आवाजाही में दिक्कत है। इस सड़क में श्रीकुण्ड के पास बोल्डर गिरने से बन्द सड़क को मुश्किल से खोला गया। रौंसाल-कायल-मटियानी सड़क मार्ग जगह-जगह मलबा आने से कटी है।

पांखू-धरमघर सड़क पर देवीगाड़ नाला उफनाने से डामर उखड़ चुका है। सड़क की खस्ता हालत को लेकर ग्रामीण पहले से ही आवाज उठा रहे हैं।

मदकोट-मुनस्यारी सड़क की बदहाली को लेकर लगातार कहा जा रहा है अब तो मानसून की मार पड़नी शुरू हो गई है। बागेश्वर जिले के कपकोट में कभड़ भ्योल में पत्थर गिरने से आवाजाही में सतर्क रहने की जरूरत है। प्रशासन द्वारा मार्ग खोलने की तैयारी भी की है।

इधर हल्द्वानी में मानसून की आहट से पहले ही प्रशासन बन्द पड़े नाले खुलवाने में जुट गया था। इसके तहत कलसिया नाले सहित तमाम जगह नालों को घेरे लोगों को नोटिस थमा दिये गये और पानी के लिये रास्ता बनाया। कठघरिया में सिंचाई विभाग की भूमि पर कब्जा हटाया गया।

चम्पावत में एडीएम जयवर्धन शर्मा ने मौसम में सावधान रहने को लेकर बैठक ली और सभी से अलर्ट रहने को कहा। रामनगर में विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने आपदा प्रबन्धन की बैठक में अधिकारियों को बाढ़ सुरक्षा के लिये 24 घण्टे अलर्ट पर रहने के निर्देश दिये।

रुद्रपुर में मौसम के मिजाज को देखते हुए डीएम पंकज उपाध्याय ने बैठक ली। कल्याणी नदी पर अतिक्रमण के कारण जलभराव और नदी का नाले में बदल जाना चिन्ता की बात है। ऐसे में प्रशासन ने 1028 अतिक्रमण चिन्हित करते हुए 550 को नोटिस भी जारी कर दिया है। कहा है अपने आप से अतिक्रमण हटा लें अन्यथा कार्रवाई होगी।

पर्वतीय मार्गों पर संभल कर चलें

बन्द नालों को खुलवाने में जुटा प्रशासन

गंगोलीहाट महाविद्यालय तक सड़क बनाने की मांग को लेकर चेतावनी

गंगोलीहाट। क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालय तक सड़क बनाने की मांग को लेकर संघर्ष छिड़ चुका है। लम्बे समय से सड़क की मांग कर रहे क्षेत्रवासियों का कहना है कि कालेज भवन तो बन गया लेकिन सुविधाओं का भी ध्यान रखना चाहिये। छात्रों ने इस बारे में एसडीएम को ज्ञापन भी सौंपा। कहा कि सड़क न होने से कालेज जाने के लिये परेशानी का सामना करना पड़ता है। ज्ञापन देने वालों में अमित वर्मा, गौरव चन्द्र, गौरव बोरा, भास्कर कोठारी थे।

गड्ढे न भरने से खानों में बना है खतरा

बागेश्वर। उच्च न्यायालय के आदेश पर जनपद के खड़िया खानों में खनन बन्द है। मशीनें खान पर सीज हैं। ऐसे में बरसात से पूर्व खानों में बने गड्ढे भरे नहीं जा सके हैं, जिससे भूस्खलन सहित खतरा बना हुआ है। ग्रामीणों ने इस बारे में प्रशासन व खान विभाग से गम्भीरता से कार्रवाई की मांग की है। साथ ही आवश्यकता पड़ने पर अदालत से इसकी अनुमति लिए जाने की मांग की है।

कपकोट सड़कों का सुधारीकरण स्वीकृति

बागेश्वर। प्रदेश सरकार द्वारा कपकोट विधानसभा क्षेत्र की चार सड़कों के सुधारीकरण कार्य के लिये 875.87 लाख रुपये की प्रशासनिक व वित्तीय स्वीकृति मिल गई है। शीघ्र ही इन पर कार्य प्रारम्भ कर दिया जाएगा। डीएम ने कहा कि इन सड़कों के सुधारीकरण से लोगों को यातायात में आसानी होगी। उन्होंने सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को समय से गुणवत्तायुक्त कार्य पूरा करने को निर्देश दिये हैं।

पिघलता हिमालय स्थापना के 48वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

सी.एस.मर्तोलिया

(रिटा.कमांडेंट)

हिलव्यू काटेज, जोहार नगर

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

पिघलता हिमालय स्थापना के 48वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

नवीन वर्मा

राज्यमंत्री, उत्तराखण्ड शासन

उपाध्यक्ष, वरिष्ठ नागरिक कल्याण परिषद

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel

Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)